ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 55-56

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

सामाजिक सौहार्द के प्रतीक बुन्देलखण्ड के सूफी सन्त

डॉ0 मीरा पाल

एसो0प्रो0– इतिहास विभाग, डॉ0 भीमराव आम्बेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 03 .10. 2021, Revised- 08 .10. 2021, Accepted - 11.10.2021 E-mail: drmeerapal6@gmail.com

सारांशः *अति प्राचीन काल से बुन्देलखण्ड ने अपनी भावनात्मक एकता तथा वैभवशाली गाथाओं से भारत को गौरवान्वित किया है। बुन्देलखण्ड जहाँ अपनी वीरता, पराक्रम, शौर्य और संस्कृति के कारण विश्वविख्यात है वहीं अपनी साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए भी जाना जाता है।*

तेरहवीं शताब्दी से बुन्देलखण्ड में सुफी संतों का आगमन होना प्रारम्भ हो गया था। 1309 संवत में हजरत वीर मुबारक शाह का महोबा में आगमन हुआ। आप सूफीवाद के सोहरावर्दी कादिरी सिलसिले थे। चंपेल शासक कीर्तिवर्मन द्वारा निर्मित "कीरत सागर के पास" धुवनी पहाड़ी में महोबा के सबसे प्राचीन सूफी ताला सैय्यद का मजार है इन्होंने आल्हा, अहल, मलखान, सुलखान देवा आदि शूखवीरों को सैन्य शिक्षा–दीक्षा प्रदान की इसका वर्णन "आल्हा समर सायवल" में है। हज़रत हाज़ी कुतुबशाह (रह0) सूफी सन्त अरब क्षेत्र में चन्देल शासक वीरवर्मन के समय महोबा आये। इनकी दरगा कल्याण सागर के परिश्चमी तट पर स्थिर है। आज भी उनकी दरगाह पर सभी धर्मों के मानने वालों का ताँता लगा रहता है।

कुंजीभूत शब्द– भावनात्मक एकता, वैभवशाली, गौरवान्वित, शौर्य, संस्कृति, विश्वविख्यात, साम्प्रदायिक सौहार्द ।

13वीं शताब्दी में (1192 संवत) मीर मलक सहन शाह अरब से महोबा आने वाले प्रमुख सन्त है। आपको सूफीयत में महोबा जनपद के सभी सूफी सन्तों का बादशाह माना जाता है इसीलिए इन्हें "मलक श्री बादशाह" कहा गया है।

महोबा जनपद के मदनसागर के मध्य गोरखगिरी की पहाड़ियों के मध्य हाजी रहमत उल्लाह शाह की दरगाह है। आप लोगों को नेकी की राह पर चलने की तबलीग करते थे। आज भी लाखों की तादाद में हिन्दू–मुस्लिम इनके शिष्य है। इनकी दरगाह नौ गज लम्बी है इसलिए इन्हें नौगजा परी कहा जाता है। मखदमू शाह आला (रह0) का मज़ार है ये अरब से आये। इनके मज़ार की तामीर फिरोजशाह तुगलक के समय फरीद शेख मलिक अकबर द्वारा करायी गई।

बुन्देलखण्ड अचल में स्थित कालपी नगर सूफी खानकारों की पवित्र भूमि मानी जाती है। यहाँ स्थित खानकाह की स्थापना 13वीं से 14वीं शदी के मध्य हुआ। झाँसी जनपद में प्रसिद्ध सूफी जीवनशाह की मज़ार है। इन्होंने हिन्दू–मुस्लिम ध र्म के लोगों के मध्य व्याप्त तनाव को मिटाकर धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहित किया। बुन्देलखण्ड जनपद–ललितपुर में बाबा सद्दनशाह तो सूफी होते हुए भी हिन्दुओं के गुरू के नाम से विख्यात हुए।

उनकी दरगाह को हिन्दू शासक द्वारा बनवाया गया। हमीरपुर जनपद के पास रागौल (मौदहा) से 09 कि0मी0 दूर कम्हरिया गाँव में महान संत शाह हकीम मोहम्मद अब्दुल्ला, बाबा निज़ामी की दरगाह है जो कम्हरिया शरीफ वाले बाबा के नाम से विख्यात हैं। उन्होंने क्षेत्र में आपसी सद्भाव व प्रेम की भावना को समुदाय में बलवती किया। बुन्देलखण्ड की सीमा से जुड़े छतरपुर जिले में प्रख्यात सूफी संत मस्तान शाह बाबा की दरगाह है।

बुन्देलखण्ड के केन्द्रक माने जाने वाले जनपद–बाँदा में भी सूफी संतों का आगमन 15–16 श0 के आस–पास हुआ यहाँ पर जरेली कोठी वाले बाबा की मज़ार है जो यहाँ की सबसे प्राचीन मज़ार है। हज़रत मिस्कीन शाह बाबा भी यहाँ के प्रमुख सूफी संत थे जिन्होंने बसंत उत्सव को हिन्दू–मुस्लिम के साथ तीन दिन तक मनाया था। इन्होंने गंगा–यमुनी सभ्यता को स्थापित करने में पूरा योगदान दिया।

इस्लाम से संबंधित सूफी बाबा वास्तव में भारत में हिन्दू–मुस्लिम एकता को विस्थापित कर साम्प्रादायिक सौहार्द जैसे विशिष्ट मूल्य को दृढ़ता प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

महान सूफी सन्त ख्वाजा मुईन–उद्दीन चिश्ती (रह0) उनके सूत्रधार है और उनकी ख्याति विश्व स्तर पर विराजमान है। इन संतों की जीवन शैली का अप्रतिम गुण है त्याग व बलिदान। सूफी संतों ने प्रेम फलित पुष्पमाला को तैयार किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाँदा गजेरियर – पृ0 सं0 1–3
2. बाणभट्ट– हर्षचरित।
3. वर्मा, हरिश्चन्द्र– "मध्यमकालीन भारत" 1983, हिन्दी माध्यम।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

4. कर्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली पृ0सं0 481
5. समुद्रगुप्त अभिलेख इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद।
6. हमीरपुर गजेरियर पृ0सं0 110
7. जिया, डॉ0 आफताब– आर्केलॉजी सर्वे इंडिया।
8. श्रीवास्तव, के0सी0, भारत की संस्कृति (2010–11) पृ0सं0 350–356

*****